ज्योतिराव फुले

प्रीलिम्स के लिये:

ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई।

मेन्स के लिये:

सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलन, महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री ने महान समाज सुधारक, दार्शनिक और लेखक महात्मा ज्योतिराव फुले की जयंती (11 अप्रैल) पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्हें ज्योतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है।

//

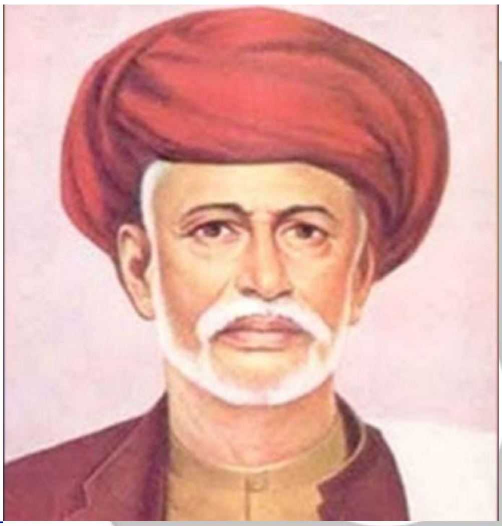

ज्योतिराव फुले कौन थे?

- **संक्षिप्त परिचय:**
    - **जन्म:** ज्योतिराव फुले का जन्म 11 अप्रैल, 1827 को वर्तमान महाराष्ट्र में हुआ था और वे सब्जियों की खेती करने वाली माली जाति से संबंधित थे।
    - **शिक्षा:** वर्ष 1841 में फुले का दाखिला स्कॉटिश मिशनरी हाईस्कूल (पुणे) में हुआ, जहाँ उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की।
    - **विचारधारा:** उनकी विचारधारा स्वतंत्रता, समतावाद और समाजवाद पर आधारित थी|
        - फुले थॉमस पाइन की पुस्तक 'द राइट्स ऑफ मैन' से प्रभावित थे और उनका मानना था कि सामाजिक बुराइयों का मुकाबला करने का एकमात्र तरीका महिलाओं निम्न वर्ग के लोगों को शिक्षा प्रदान करना था।
    - **प्रमुख प्रकाशन:** तृतीया रत्न (1855); पोवाड़ा: छत्रपति शिवाजीराज भोंसले यंचा (1869); गुलामगिरि (1873), शक्तारायच आसुद (1881)।
    - **संबंधित सगठन:** फुले ने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर वर्ष 1873 में सत्यशोधक समाज का गठन किया, जिसका अर्थ था सत्य के साधक 'ताकि महाराष्ट्र में निम्न वर्गों को समान सामाजिक और आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकें।
    - **नगरपालिका परिषद सदस्य: वह पूना नगरपालिका के आयुक्त नियुक्त किये गए और वर्ष 1883 तक इस पद पर रहे।**

  - **महात्मा का शीर्षक:** 11 मई, 1888 को महाराष्ट्र के सामाजकि कार्यकर्त्ता वट्ठिलराव कृष्णजी वांडेकर द्वारा उन्हें '**महात्मा**' की उपाधसि सम्मानति कयाि गया।
- **समाज सुधारक:**
  - वर्ष 1848 में उन्होंने अपनी पत्नी (सावत्रिीबाई) को पढ़ना-लखिना सखिाया, जसिके बाद इस दंपतनिे पुणे में**लड़कयिों के लयि पहला स्वदेशी रूप से संचालति स्कूल** खोला, जहाँ वे दोनों शक्षिण का कार्य करते थे।
    - वह लैंगकि समानता में वश्विास रखते थे और अपनी सभी सामाजकि सुधार गतवधियों में पत्नी को शामलि कर उन्होंने अपनी मान्यताओं का अनुकरण कयाि।
  - वर्ष 1852 तक फुले ने तीन स्कूलों की स्थापना की, लेकनि **1857 के वद्रिोह** के बाद धन की कमी के कारण वर्ष 1858 तक ये स्कूल बंद हो गए थे।
  - ज्योतबाि ने वधिवाओं की दयनीय स्थतिको समझा तथा युवा वधिवाओं के लयि एक आश्रम की स्थापना की और अंततः वधिवा पुनर्ववािह के वचिार के पैरोकार बन गए।
  - ज्योतराव ने ब्राह्मणों और अन्य उच्च जातयिों की रुढ़विादी मान्यताओं का वरिोध कयाि तथा उन्हें "पाखंडी" करार दयाि।
  - वर्ष 1868 में ज्योतराव ने अपने घर के बाहर एक सामूहकि स्नानागार का नरि्माण करने का फैसला कयाि, जसिसे उनकी सभी मनुष्यों के प्रतअिपनत्व की भावना प्रदर्शति होती है, इसके साथ ही उन्होंने सभी जातयिों के सदस्यों के साथ भोजन करने की शुरुआत की।
    - उन्होंने जन जागरूकता अभयिान शुरू कयाि जसिने आगे चलकर डॉ. बी.आर. अंबेडकर और महात्मा गांधी की वचिारधाराओं को प्रभावति कयाि, जन्िहोंने बाद में जातगित भेदभाव के खलिाफ बड़ी पहलें की।
  - कई लोगों द्वारा यह माना जाता है कदिलति जनता की स्थतिकि चत्रिण के लयि फुले ने ही पहली बार 'दलति' शब्द का इस्तेमाल कयाि था
  - उन्होंने महाराष्ट्र में अस्पृश्यता और जातव्यिवस्था को समाप्त करने के लयि काम कयाि।

मृत्यु: 28 नवंबर, 1890 को उनकी मृत्यु हो गई। उनका स्मारक फुलेवाडा, पुणे, महाराष्ट्र में बनाया गया है।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्षों के प्रश्न:

प्रश्न. सत्य शोधक समाज का गठन सबंधति है: (2016)

(a) बहिार में आदवािसयिों के उत्थान के लयि एक आंदोलन।
(b) गुजरात में एक मंदरि-प्रवेश आंदोलन।
(c) महाराष्ट्र में एक जातवरिोधी आंदोलन।
(d) पंजाब में एक कसािन आंदोलन।

उत्तर: (c)

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/jyotirao-phule-3